राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 20-00 संख्या 84
पीछे पड़ा
भालू
बांकेलाल
एक
मजेदार
विशेषांक
- बेदी

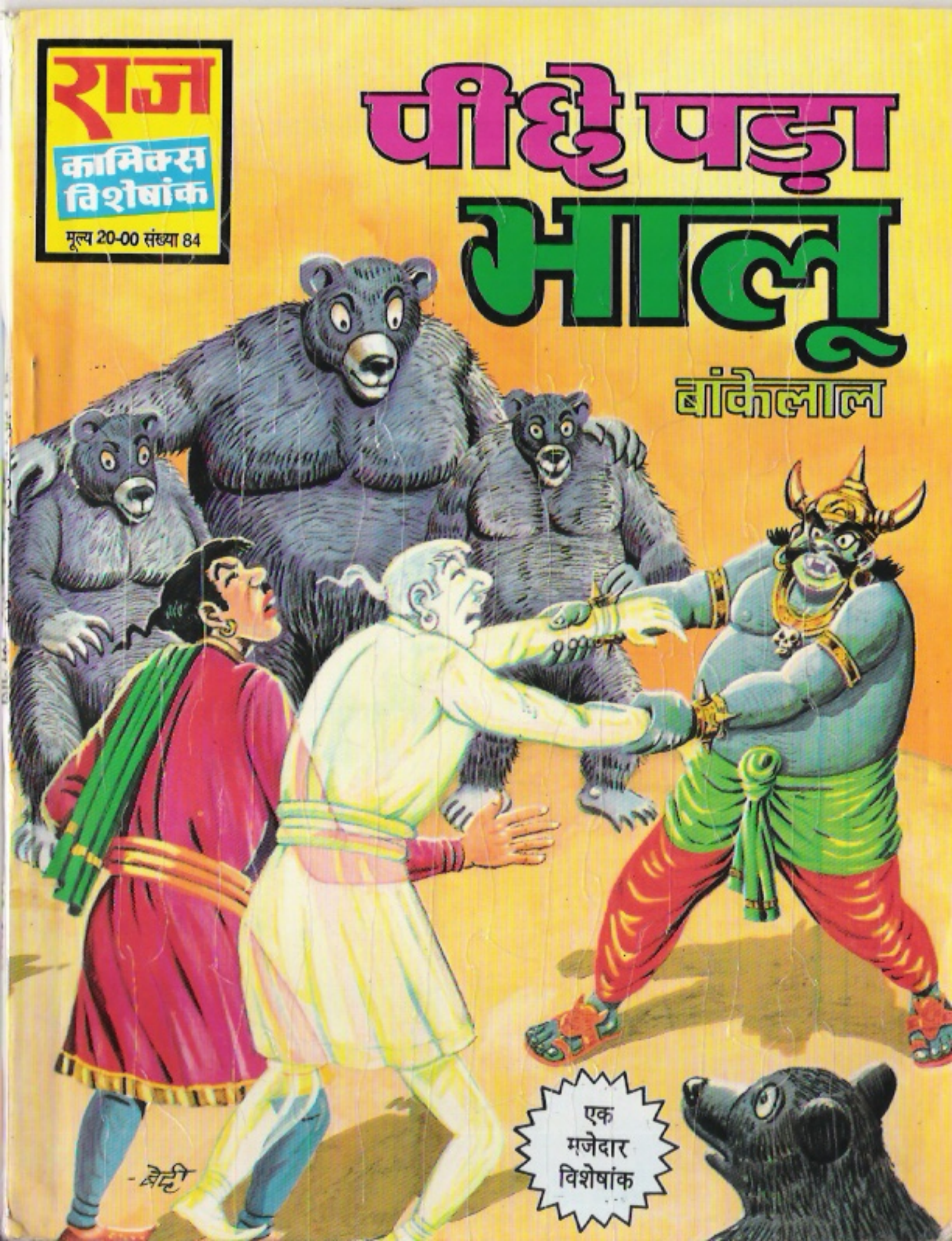

अब आप अपनी पसंद की केवल एक कॉमिक भी घर बैठे मंगा सकते हैं

बॉकेलाल की पांच बेहतरीन कॉमिक्स

बॉकेलाल के 20/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- बांकेलाल और तिलिस्मदेव
- राजा बांकेलाल
- आई बला टालो
- इच्छामणि
- खड़ाऊ
- स्वयंवर
- राजमुकुट
- दशानन
- तड़ीपार
- स्वर्ग का सिंहासन
- युद्ध के बीज
- सुर और असुर
- चुड़ैला
- विष्णुचक्र
- पुष्कलकेतु
- डाकू खोपड़ीमाल
- जादुई कान
- कम भक्त
- बांकेलीला
- कालसर्प योग
- कर बुरा हो बुरा
- उल्टा योग
- हरी जल परी
- कुबेर का खजाना
- शिवजी की बारात
- राक्षस और भगवान
- खावन
- बांकेलाल और चेतक
- प्याज वाली चुड़ैल
- शैतान चालीसा
- जादू का घड़ा
- मृत्यु योग
- वरदान
- मानव और दानव
- अक्कड़ बक्कड़
- चार सौ बुद्धि
- एक ईंट का महल

बॉकेलाल के 15/- मूल्य वाले कामिक्स

- बांकेलाल का कमाल
- कर बुरा हो भला
- राजकोष के लुटेरे
- बांकेलाल और यक्षकुमार
- बांकेलाल मुकद्दर का धनी
- बांकेलाल और शादी का षड्यंत्र
- स्वर्ग की मुसीबत
- पारस पत्थर
- लाश की तलाश
- खतरे का अवतार
- बांकेलाल और चालीस चोर
- परियों की मुसीबत
- बांकेलाल और जादूगर डांगा
- बांकेलाल और मुर्दा शैतान
- बांकेलाल और षड्यंत्रकारी आत्
- बांकेलाल और मौत का त्रिशूल

बॉकेलाल के 10/- मूल्य वाले कामिक्स

- देवपुत्र
- खुजालराज
- चोर खोपड़ी
- राजसी तलवार
- दंडक वन
- सिंहासन बत्तीसी

बॉकेलाल के 40/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- बांकेलाल और कलियुग

बॉकेलाल के 25/- मूल्य वाले कामिक्स

- बांकेलाल और भोकाल

Now you can order all your favorite comics from our online book store www.rajcomics.com

कोई भी 100/- मूल्य से कम की कॉमिक्स हमसे डाक द्वारा मंगाने पर कॉमिक्स के मूल्य के साथ 20/- डाक खर्च भेजें।

कोई भी 100/- मूल्य या अधिक की कॉमिक मंगाने पर डाक खर्च मुफ्त!

आप अपनी पसंद की कॉमिक्स अग्रिम भुगतान भेजकर डाक द्वारा मंगा सकते हैं। अग्रिम भुगतान निम्नलिखित दो तरीकों से भेज सकते हैं
1. निकटवर्ती पोस्ट ऑफिस से अपनी आदेशित कॉमिको के मूल्य का मनीआर्डर राजा पॅाकेट बुक्स 330/1, बुराडी, दिल्ली-84 के नाम बनवाकर, मनीआर्डर फार्म के संदेश वाले स्थान पर आदेशित पुस्तको के नाम व अपना पता साफ-साफ लिखकर भेजें।
2. किसी भी बैंक से राजा पॉकेट बुक्स के नाम **Payable at Delhi** का ड्राफ्ट बनवाकर, पत्र के साथ जिसमे आपकी आदेशित पुस्तकों के नाम व आपका पता साफ-साफ लिखा होना आवश्यक है। भेजें।

दम लगा कर...
जोर लगा कर...
हईशा
हईशा
अरे! तुम सब मेरे पीछे क्या कर रहे हो?
जैसे-तैसे सबने मिल कर विक्रमसिंह को टूटे सिंहासन से उठाया–
महाराज को (इस दुनिया से) उठाने के लिये तो मैं अकेला ही काफी हूं। हीहीही।
मेरा सिंहासन तो टूट गया। अब मैं कहां बैठूंगा?
पिताजी! आप मेरे सिंहासन पर बैठ जाइये।
फिर तुम कहां बैठोगे बेटा?
मैं तो गुल्ली-डण्डा खेलने जा रहा हूं पिताजी!
महाराज! ये क्या कर रहे हैं। मोहकसिंह के सिंहासन पर तो आप आधे ही आयेंगे। हीहीही।
फिर मैं कहां पर बैठूं?

आइये महाराज! मैंने आपके लिये कालीन पर आपातकालीन प्रबंध कर दिया है।
हां। ये आसन नहीं टूटने का। हीहीही।
विक्रमसिंह ने अपना आसन ग्रहण किया ही था कि–
इसे भी ग्रहण करें महाराज!
ये क्या है राजवैद्य?
ये (मोटापा) वजन कम करने की दवा है महाराज! हीहीही।
अजी! अब पी भी लीजिये।
जी हां महाराज! वरना अर्थी उठाने वाला भी कोई न होगा। हीहीही।
ठीक है महारानी, अगर तुम कहती हो तो पी लेता हूं।
बोलो नीम हकीम।
जिन्दाबाद!
पर मुच्छड़ मुर्दाबाद। हीहीही।

राजवैद्य ! ये दवा तो बहुत स्वादिष्ट थी।
जी हां महाराज ! ये ताजे पकड़े केंचुओं का अर्क था। हीहीही। इसे पीकर आप केंचुए की तरह पतले हो जाएंगे।
क्या? वैऽऽऽक
वैऽऽक
अरे! इन्हें तो उबकाइयां शुरू हो गई। ऐसा तो मुझे तब हुआ था जब मोहक होने वाला था।
महारानीजी ! फिर तो अनर्थ होने वाला है। हीहीही।
मेरे होते अनर्थ नहीं हो सकता महाराज! ये गोली चूस लें।
गप्प!
ये गोली मैंने घोड़े की लीद मिलाकर बनाई है। उबकाइयों के लिये बहुत फायदेमंद है।
भले ही उल्टियां शुरू हो जाएं। हीहीही।
वैऽऽकऽऽ
सब अपनी-अपनी नाक पर रूमाल रख लो। हीही ही।
महाराज की तबीयत खराब है। इन्हें (बाहर निकालो) विश्राम के लिए भेजो। हीहीही।
मगर विक्रमसिंह की उल्टियां शुरू हुईं तो फिर न रुकीं।

ी घण्टे पश्चात विक्रमसिंह के शयनकक्ष में—
राजवैद्य ! महाराज की उल्टियां तो रुक ही नहीं रहीं !
वैऽऽऽके
मैं उल्लू की आंख का काढ़ा बना रहा हूं महामंत्रीजी ! पर उसमें डालने के लिए जंगली मधुमक्खियों का शहद मेरे पास उपलब्ध नहीं है।
र ऐसे तो निर्जलीकरण के कारण महाराज मर जायेंगे।
चलो ! बला टलेगी हीहीही।
मेरे होते वे निर्जलीकरण से नहीं मर सकते।
वो तो हम सब जानते हैं। हीहीही।
निर्जलीकरण : शरीर में जल की कमी होना।
ंकेलाल ! सेनापति ! ंगली मधुमक्खियों का शहद तुलने से ीन ला येगा?
आह ! महामंत्रीजी, मेरे पांव में अभी खड़े-खड़े झटका आ गया है। और छत्ते से शहद निकालने के बाद भागने के लिये पांव तो मजबूत होने ही चाहिए। बांकेलाल को भेज दो। उसके पांव घोड़े की तरह मजबूत हैं।
मोच का इलाज भी है मेरे पास। सेनापति को हाथी से झटका लगवाना होगा।
बांकेलाल ! तुम जाओ। क्योंकि सेनापति को महाराज की उल्टियों की सफाई की व्यवस्था युद्धस्तर पर करनी है। कहीं महाराज की ये बीमारी महामारी न बन जाए।
जो आज्ञा महामंत्री !
मैं भालू होता तो तुम्हें कचूमर बना देता बांकेलाल ! आह ! हीहीही !

बांकेलाल 'बादशाह' पर सवार होकर जंगल की ओर चल पड़ा—
मैंने धुवबाल अपने पास रखली है...
...उसे सुलगा कर उसका धुआं जब मैं छत्ते की तरफ उड़ाऊंगा तो सारी मधुमक्खियां उड़ जायेंगी
...फिर मैं शहद निकाल लूंगा।
हिन हिन। (क्यों बांकेलाल! सिर के बल गिराऊं या मुंह के बल। हीहीही) हिन हिन।
हिन हिन (चल पीठ के बल गिराता हूं)। हिन हिन हीहीही।
अबे! रुक जा! आह!
गुर्र (बिल्कुल ठीक जगह पर आकर गिरा है हीहीही।
गुर्र (क्योंकि यहां मौजूद है भरवा गीदड़ हीहीही) गर्रर्रर्र।
य...ये तो गीदड़ है।
धत तेरे की। ये तो गीदड़ है। मैं तो शेर समझा था।

बापरे भागो। गीदड़ अकेले आदमी पर वार करने से नहीं चूकते।
हुआं हुआं (वाह! मानव। और वो भी मुझसे ज्यादा डरपोक। हीहीही) हुआं ऽऽऽ हुआं
वन में ही एक स्थान पर—
दर्शन दे भगवान! दर्शन दे भगवान! दर्शन दे भगवान!
इस ऋषि का नाम था पत्नी भक्त जो भगवान 'वरदे' का घोर भक्त था।
जो कि उस समय भ्रमण पर स्वर्ग से पृथ्वी पर पहुंचे हुए थे।
दर्शन। दर्शन। दर्शन। दर्शन।
ओह! ये तो मेरा भक्त है! इस वक्त भी मेरी कठिन आराधना में लीन है। इसे दर्शन भी दूंगा और वरदान भी।
कौन है बे?
आंखें खोल वत्स! देख। कौन आया है?
ओह! भगवान वरदे!
वर नहीं दोगे भगवान?

तेरी कठोर तपस्या देखकर वही देने तो आया हूं। मांग। क्या मांगता है?
भगवान! मुझे दमे की बीमारी है। और ये मुझे वातावरण में फैली धूल से होती है।
ये धूलकण मुझ तक न पहुंचे कुछ ऐसा जुगाड़ करवा दें भगवान! मेरा मतलब भगवान!
तो फिर ये ले वत्स! इस मंत्र को 'खींचले छोड़' कहते हैं। इसे अपनी पीठ पर टांगलो। ये आस-पास की सारी धूल खींच कर पीछे को छोड़ देगा।
मगर ध्यान रहे अगर इसे किसी अन्य ने धारण किया तो फिर इसमें से छूटने वाली धूल भयंकर आंधी के समान होगी। और वह आंधी तब ही रुकेगी जब इसके पिछले छेद को बंद कर दिया जायेगा।
वह मंत्र देकर भगवान वरदे तुरन्त ही अंतर्ध्यान हो गए। और तब-
अरी भागवान! अब तो दर्शन दे दे। कितनी देर से तुझे मनाने के लिये एक टांग पर खड़ा हो कर तेरा नाम दर्शन-दर्शन चिल्ला रहा था। तू मेरे दमे के रोग के कारण मुझसे रूठ गई थी न। ये देख। भगवान वरदे ने प्रसन्न होकर मुझे क्या दिया है?
और तभी-
अब तेरे सारे रोग कट जायेंगे ऋषि पत्नीभक्त। क्योंकि मैं यमदूत हूं। तेरा समय पूरा हो गया। मैं तुझे लेने आया हूं। हीहीही।
नहीं! मैं मरने के लिये थोड़े ही पैदा हुआ हूं। बचाओ।
यमदूत खिड़की से झांकती ऋषि पत्नी को नहीं दिखाई दे रहा था।

यमदूत ने ऋषि पत्नीभक्त की आत्मा उसके जिस्म से खींचनी शुरू कर दी।
मूर्ख! जो पैदा हुआ है उसे तो मरना ही पड़ता है। हीहीही।
छोड़! मेरी आत्मा को छोड़ दे कमबख्त। उफ! पकड़ में क्यों नहीं आ रही? बहुहुहु।
इसी पल बांकेलाल आ टकराया मृत ऋषि पत्नीभक्त से-
ओह! यह क्या?
ये तो बांकेलाल है।
हड़बड़ाहट में बांकेलाल ने मृत ऋषि को एक तरफ धकेला और खुद भाग पड़ा-
संयोग से ऋषि जाकर गिरा सीधा गीदड़ के आगे-
हुआं हुआं! ओह। वो तो भाग गया। पर ये भी बुरा नहीं। मेरा पेट तो इससे भी भर जायेगा। ये शायद मुझे देखकर बेहोश हो गया है। हीहीही।
बांकेलाल मेरे स्वामी को गीदड़ की ओर धकेल कर खुद भाग गया। बांकेलाल अब तू नहीं बचेगा दुष्ट! आह! स्वामी! क्षमा करना। मैं तो रो भी नहीं सकती। क्योंकि गीदड़ ने आवाज सुन ली तो मुझे भी फाड़ कर तुम्हारे पास पहुंचा देगा। बहुहुहु।

इधर बांकेलाल किसी तरह 'मधु' लेकर महल पहुंचा—
आओ बांकेलाल! शहद ले आए?
जीहां महामंत्रीजी! ये रहा।
मगर बांकेलाल! तुम्हारे वस्त्र कैसे फट गए? सूजा तो तुम्हारा थोबड़ा होना चाहिए था। हीहीही।
मैंने शीशी में गुड़ की चाशनी भरी हुई है। ये शहद ही लगे। इसके लिये मैंने एक मधुमक्खी भी मार कर शीशी में डाल दी है। हीहीही।
बस यूं ही जरा भालू से भिड़न्त हो गई थी सेनापति! कम्बख्त भाग गया। वरना आज मैं उसकी खाल भी लेकर आता। हीहीही।
अच्छा हुआ सेनापति कि तुम शहद लेने नहीं गए। वरना भालू अपनी गुफा में तुम्हारी खाल सजा रहा होता। हीहीही।
हुंऽऽऽ
उल्लू की आंख का काढ़ा तैयार है। यह शहद मिलाकर काढ़ा मैं महाराज को पिलाता हूं। हीहीही।
काढ़ा बनाकर राजवैद्य विक्रमसिंह के पास पहुंचा—
महाराज! ये दवा पी लीजिये। इसे पीते ही उल्टियां बन्द हो जायेंगी..
...और दस्त लग जायेंगे। पर उसका इलाज भी मेरे पास है। करेले का उबला हुआ पानी और तोरी के सूखे बीज। हीहीही।

तभी वहां गूंज उठी टंकार।
तेरी फूं की फूं। मैं महामंत्री बोल रहा हूं। तुम कौन बोल रहे हो?
मैं द्वारपाल अश्वपाल बोल रहा हूं महामंत्रीजी! बांकेलालजी कहां हैं?
यहीं हैं। क्यों? क्या बात है?
उन्हें फौरन भगा दीजिये या कहीं छिपा दीजिये। क्योंकि बहुत से क्रोधित ऋषिमुनि उनकी खोज में अभी-अभी जबरदस्ती महल में घुस गए हैं।
वो सब के सब बांकेलालजी को शाप देना चाहते हैं एक ऋषि को गीदड़ के सामने धकेल कर उसकी हत्या के जुर्म में।
क्या?

फिर जब महामंत्री ने बांकेलाल को वह बात बताई तो बांकेलाल के रोंगटे भय से खड़े हो गए–
सेनापति के बच्चे! तुझे देख लूंगा। गुर्रर्र!
बांकेलाल! जल्दी करो। महाराज के पलंग के नीचे घुस जाओ। वहां उल्टी के पात्र रखे हैं। इसलिये कोई ऋषिमुनि उस तरफ नहीं झांकेगा। हीहीही।
वैऽऽऽक
और तभी–
अरे! राज धोबी! तुम यहां कैसे?
महामंत्री! बाहर वर्षा के से आसार लग रहे हैं। इसलिये मैं कपड़े सुखाने के लिए यहीं चला आया। बाकी कपड़े मैंने अन्य कक्षों और दरबार में रस्सियां बांधकर सूखने के लिए डाल दिये हैं। हीहीही।
आप जरा पीछे-पीछे हट जाएं। मुझे अपने काम में दखलंदाजी बिल्कुल पसन्द नहीं है।
वैऽऽक
धोबी के जाने के बाद एक दरबारी ने घबराए हुए वहां प्रवेश किया।
बांकेलालजी! सारे ऋषि-चप्पे-चप्पे पर आपकी तलाश करते हुए आपको शाप देने इसी ओर आ रहे हैं। राजकुमार मोहक सिंह ने उन्हें बता दिया है कि आप महाराज के कक्ष में हैं।
क्या?
तरकीब सूझ गई। बांकेलाल! जल्दी से महाराज के पाजामे में घुस जाओ। हीहीही।
वहां तो जगह भी न होगी। हीहीही।
सेनापति! मुंह संभालकर बात करो। गुर्ररर।
मैं उस पाजामे की बात नहीं कर रहा महाराज जो आप ने पहना हुआ है।
बल्कि उस पाजामे की बात कर रहा हूं जो वहां खूंटी पर सूखने के लिए लटका हुआ है।
मैंने पजामे के दोनों पांयचों में नीचे से गांठ बांध दी है। ताकि अन्दर घुसकर तुम नीचे से गिरो नहीं। पाजामा यहीं खूंटी से टंगा होगा तो किसी को पता नहीं चलेगा कि इसमें बांकेलाल है। ऊपर से मैं पाजामे का मुंह नाड़े से बन्द कर दूंगा। हवा तक अन्दर नहीं जा पायेगी। हीहीही।
बम बम भोले
जय संतोषी माता की ऽऽऽ
बांकेलाल इसी कक्ष में होगा
देखते ही शाप दे देना
बांकेलाल! जल्दी करो। मैं इन्हें नहीं बताऊंगा कि तुम यहां छिपे हो।
बांकेलाल छिप जाओ।
बहुहु!

बोल राजा! दुष्ट बांकेलाल कहां है?
मैं झूठ नहीं बोलता, मेरे पजामे में है। बैऽऽऽक
राजा होकर हमसे उपहास करता है। दें शाप?
मुझे मेरी योग शक्ति बता रही है कि बांकेलाल उत्तर दिशा की ओर है।
उत्तर दिशा तो यही है। पर यहां तो बांकेलाल कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा।
प..पजामे में गांठ लगा रहा था। हीही ही।
और तुम तो सेनापति हो। तुम यहां दीवार की तरफ मुंह करके क्या कर रहे थे?
क्या? छीः छीः तुमने यहां कक्ष में गन्दा कर दिया। और उधर राजा वहां उल्टी कर रहा है।
लगता है विशालगढ़ में महामारी शीघ्र ही फैलने वाली है।

थोड़ी देर पश्चात-
बांकेलाल यहां नहीं है। पर मेरी योग शक्ति तो बार-बार बांकेलाल के यहां होने का आभास दे रही है।
किसे पता था कि एक दिन मुझे ऋषियों से जान बचाने के लिए मुच्छड़ के पजामे में शरण लेनी होगी। खुहुहुहु!
तभी-
सेनापतिजी! कपड़े सूख गए होंगे। अब इन्हें इस्त्री के लिये ले जाना है। हीही ही।
बैकऽऽ
बैकऽऽ
इतना कैसे बढ़
ऐसा लग रहा
जैसे महाराज की
अच्छा महाराज! जय राम जी की। चल मेरे गधे। हिन हिन।
ढेंचू ढेंचू (मारक्यों रहा है? चल तो रहा हूं। खुहुहुहु) ढेंचू ढेंचू।
गधे के बच्चे! रस्सी तुझे लगी आह!

हम भी चलते हैं। शायद बांके महल से निकल भागा है। और उत्तर की ओर भाग गया है।
पर हम उसे छोड़ेंगे नहीं। शाप जरूर देंगे। अपने साथी की हत्या का भयंकर दण्ड देंगे।
बचाओ। बचाओ।
बचाओ! बचाओ! महाराज गजब हो गया। आपके पाजामे में भूत है। वो हिल रहा है। मैंने नाड़ा खोलकर देखा तो भूत की चोटी मुझे दिखी।
ओह! यह जरूर बांकेलाल होगा। पकड़ो उसे।
मगर तब तक बांकेलाल पाजामे से निकल कर हो चुका था फुर्र-
भागो। कहीं ऋषियों ने देख लिया तो शाप दे देंगे। पर मैंने ऋषि की हत्या कब की?
शायद उस ऋषि को गीदड़ खा गया होगा जो मेरे धक्के से गिर पड़ा था।
मेरी योग शक्ति बता रही है कि बांकेलाल अब दक्षिण में गया है। और दक्षिण में है नगर।
ऋषि नगर की ओर बढ़ते चले गए।

अब तुमको न तो जेल की दीवारें बचा पाएंगी और न ही बचा पाएंगी तुझे दी गई एल्फा कैटेगरी की सिक्योरिटी डॉन सलीम! तेरे खून की होली खेलने के दिन खत्म हुए।
नहीं। डोगा रूक जाओ! अगर अब्बू सलीम मर गया, तो हो जाएगा...
28 फरवरी 2007 में उपलब्ध
मूल्य 30/-
...सर्वनाश
कॉमिक्स में सुपर कमाण्डो ध्रुव और डोगा का विस्फोटक विशेषांक

कहानी 19वें पृष्ठ से

हाहाहा। हार मान ली है ध्रुव ने! रसायन विज्ञान के शहंशाह अल-केमिस्ट से और छोड़ दिया है ये शहर और अपना क्राइम फाइटिंग का कैरियर!
क्योंकि ये जान गया है कि ये मुझे छू भी नहीं सकता। पर मैं इस पर, इसके अपनों पर कभी भी वार कर सकता हूं।
क्योंकि मेरा तो रूप गुप्त है, पर इसका नहीं है रूप...
गुप्त
मूल्य: 30/-
25 अक्टूबर 2007 से उपलब्ध
क्या यही है ध्रुव की एक मात्र कमजोरी? क्या ये कमजोरी ध्रुव का नामोनिशान मिटा देगी?
जानने के लिए पढ़ें राज कॉमिक्स का एक महाषड्यंत्र को बेनकाब करने वाला ये विशेषांक!

इधर नगर में उस वक्त मचा हुआ था हंगामा —
भागो। मक्खी दैत्य आ गया।
हीहीही! मुझसे बचकर कहां जाओगे? मैं तो भीतर जाने के लिए पहले ही रास्ता बना लेता हूं। दरों के शीशे तोड़ कर।
छनाक
उधर मक्खी राक्षस का फेंका एक पत्थर जा टकराया नगर में बांकेलाल की तलाश करते ऋषि
ओह! ये पत्थर मुझे किसने मारा? मैं उसे
तड़ाक
वो रहा बांकेलाल। दीवार फांद कर जा रहा है। पकड़ो उसे और अभिमंत्रित जल फेंक कर उसे शाप दे दो।
पत्थर का बदला पत्थर!
मेरी योगशक्ति बता रही है कि बांकेलाल भी उसी दिशा में है जिधर से पत्थर फेंका गया है।

ऋषि का फेंका पत्थर जाकर टकराया कांच के शैतान मक्खी राक्षस से-
मेरी बीवी ने बेलन मार कर मुझे पहले ही एक जगह से फोड़ रखा है। उस जगह को भरने के लिए ही मुझे रक्तकणों की जरूरत है। क्योंकि रक्त कणों में लौह तत्व होते हैं।
जो कि मेरे जिस्म पर चढ़ी कांच की परत को भी लौह समान मजबूत कर देंगे।
तड़ाक
मगर इन दढ़ियलों ने मुझे पत्थर क्यों मारा? अब मैं परिवर्तित होता हूं उस रूप में जिसके कारण मेरा नाम पड़ा है मक्खी राक्षस। हीहीही।
दूसरे ही पल मक्खी राक्षस का जिस्म लाखों मक्खियों के रूप में बिखर गया-
हीहीही!
भिन्न
भिन्न
भिन्न
भिन्न
भिन्न

अब मक्खी राक्षस का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच चुका था-
हीहीही। क्यों? मुझे मेरे असली रूप में देखते ही हो गई न सिट्टी-पिट्टी गुम।
चलो। मैं तुम पर इतना रहम कर देता हूं कि तुम जहां-जहां कहोगे मैं वहां-वहां डंक मारूंगा। हीहीही।
डंक तो सभी जगह दर्द करेगा। बहूहूहू।
ये कह रहा है तो दाढ़ी पर डंक मरवा लो।
ठीक है। दाढ़ी पर मारूंगा। पर मारूंगा दाढ़ी की जड़ में। हीहीही।
घना समझदार बन रिया था हीहीही।
और खटिया के नीचे ये कौन छिपा हुआ है। हमला।
ये भिन्न-भिन्न का शोर कहां से आ रहा है?
बाहर निकल कर देखता हूं।
अरे! बच गया।

बाहर का दृश्य देखकर तो बांकेलाल प्रसन्नता से ही उछल पड़ा—
वो मारा पापड़ वाले को। इन ऋषियों को तो मधुमक्खियां चिपटी हुई हैं। हीही ही।
भिन्न
पर ये आवाज तो मेरे पीछे से भी आ रही है।
भिन्न
अरे बापरे! ये तो सीधे मेरी तरफ आ रही हैं। बच बेटा बांके!
भिन्न भिन्न
जैसे ही मक्खियां बांकेलाल पर झपटीं, बांके नीचे बैठ गया। सभी मक्खियां दीवार से जा टकराईं।
आह! मरी!
मक्खियों से बचकर बांकेलाल प्रवेश कर गया उस घर में—
पर पहले दरवाजा बन्द कर दूं।
खटाक
धाड़
भिन्न
भिन्न

दरवाजा बन्द कर देने से क्या मक्खी राक्षस मेरा पीछा छोड़ देगा। मैंने अन्दर आने के लिए खिड़की के शीशे पहले ही तोड़ दिये थे। ही ही ही गुर्रर्र।
लेकिन मक्खी राक्षस का भी पाला बांकेलाल से पड़ा था।
ओफ्फ! ये क्या?
हीहीही। आओ आगे बढ़ो। मुझे काटो। और मरो। क्योंकि मैंने धुपबत्ती जलाया है। जिसके तेज धुएं में तुम्हारी अक्ल साफ हो जाएगी। हीहीही।
भागो! ये आदमी खतरनाक है।
मक्खियां फिर तुरन्त परिवर्तित हो गईं अदृश्य मक्खी राक्षस में-
अब मैं जाऊंगा इस राज्य की उत्तर दिशा में...वाह! मेरे शरीर का फटा हुआ हिस्सा मानव रक्तकणों के कारण भरने लगा है।

मक्खियों के अचानक गायब हो जाने से हैरान खड़ा बांकेलाल बाहर निकला ही था कि-
बांकेलाल! तुम पर एक ऋषि की पत्नी ने अपने पति की हत्या का इल्जाम लगाया है और कानून सबके लिये बराबर है। इसलिए तुम्हें महामंत्री के आदेश पर गिरफ्तार करने आया हूं।
क्या? जरा पहले तो तुमने ही मुझे उन ऋषियों से बचा कर भागने में मदद की थी।
वो तो इसलिये की थी ताकि क्रोधित ऋषि तुम्हें शाप दे दें।
अब मामले की तहकीकात की जायेगी। जो कि मैं ही करूंगा फिर तुम्हें फांसी से कोई नहीं बचा सकता। अब सब कुछ मेरे हाथ में है। हीहीही।
वो तो ठीक है सेनापति! पर पहले पीछे मुड़कर देख लो। तुम्हारे पीछे मक्खी राक्षस खड़ा है
मक्खी राक्षस के बारे में तो मैंने भी सुन रखा है। वो डंक मारकर पूरा सुजा देता है। बहूहूहू।
भागो बेटा बांके। हीहीही।
अरे। बांकेलाल हमें गच्चा दे गया। पकड़ो उसे। जाने न पाए। पकड़ में न आए तो तीर या भाला मारकर छेद करके पकड़ लो। तब तक मैं जग्गी पहलवान की दुकान से लस्सी पीकर आता हूं। हीहीही।
जग्गी लस्सी भण्डार

इस बार तो सैनिक हाथ धोकर बांकेलाल के पीछे पड़ गए थे। बांकेलाल शहर छोड़कर जंगल में आ पहुंचा।
बांकेलाल यहीं-कहीं झाड़ियों में छिपा होगा! ढूंढो और पकड़ लो। पकड़ा न जाए तो तीर या भाला मार कर घायल करके पकड़ लो। सख्त आदेश है।
बाप रे! सैनिक चारों ओर फैल गए हैं। इस बार तो मरा बेटा बांके। पर अरे! ये क्या है?
ये तो कोई कवच लग रहा है। चलो। इसे पहन लेता हूं।
कम से कम सैनिकों के तीरों व भालों से तो मैं बचा रहूंगा।
पोशाक धारण करते ही—
अरे! ये क्या? उफ! इसे धारण करते ही धूल-मिट्टी इस पोशाक के आगे की तरफ बने इस छिद्र में खिंची जा रही है और मेरे पीछे ये शोर कैसा उमड़ रहा है।
बांकेलाल ने गर्दन घुमा कर देखा तो और भी जोरों से चौंक पड़ा-
पीछे धूल भरी आंधी छूट रही है। और ये भी इसी वस्त्र का कमाल है।

बस फिर क्या था? मारे प्रसन्नता के बांकेलाल उछल ही पड़ा-
वाह! वो मारा पापड़ वाले को। अब आ गया समझ में। यह चमत्कारी पोशाक आगे के छेद से मिट्टी को खींचकर पीछे के छेद से बाहर उड़ाकर वातावरण में धूल ही धूल फैला देती है।
अब मैं चखाता हूं इन सैनिकों को मजा।
अरे! वो रहा बांकेलाल।
पर उसके पीछे धूल क्यों उड़ रही है?
इसलिये क्योंकि तुम्हारा पाला बांकेलाल से पड़ा है। हीहीही। अब चखो मजा।
आह! मेरी आंखों में, नाक में, कान में, मुंह में धूल चली गई।
ओह! ये तो बेहोश हो गए। हीहीही। अब मैं चलता हूं महल में। वहां उड़ाऊंगा धूल भरी आंधी जिसमें फंसकर जब कुच्चड़ दम तोड़ देगा तो मैं बनूंगा राजा। हीहीही।
मगर फिलहाल मैं इस पोशाक को उता लूं ताकि ये धूल भरी आंधी सके!

राजवैद्य! तुम्हारे काढ़े का तो प्रभाव ही नहीं हुआ! बल्कि उल्टियों के साथ दस्त भी लग गए हैं।
बैऽऽऽक
लगता है नीम का घोल पिलाना पड़ेगा। हीहीही!
तभी-
खनाक!
अरे! ये खिड़की पर पत्थर मार कर कांच किसने तोड़े?
मैं देखता हूं महामंत्रीजी!
बाहर तो कोई दिखाई नहीं पड़ रहा महामंत्रीजी!
हीहीही! मैं दिखाई नहीं पड़ता!...

भिन्न
...और जब मैं दिखाई पड़ता हूं तो सामने वाला मुझे देख कर वहां नहीं रुकता। हीहीही।
भिन्न
भिन्न
महामंत्रीजी! लाखों मधुमक्खियों ने महल को घेर लिया है। न जाने कहां से आ गई हैं इतनी मक्खियां। ये मधुमक्खियां अन्दर आ गईं तो गजब हो जायेगा।
किसी ने शीशे भी तोड़ दिये हैं। शायद कहीं इसलिये तो नहीं कि इन मधुमक्खियों को अन्दर आने का रास्ता मिल जाए। मुझे लग रहा है कि कहीं ये हरकत मक्खी-राक्षस की न हो जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा।
महाराज! अब क्या करें? मधुमक्खियां काटने आ रही हैं।
बांकेलाल कहां चला गया? इस संकट से हमें वो ही बचा सकता है।
छैंऽऽऽक

ओह तू! तू पहली बार मेरे हाथों से बच निकला था। मगर अब नहीं बचेगा। हीहीही। हा हा हा।
अरे बाप रे! बेटा बांके जल्दी से पोशाक पहन।
बांकेलाल ने फुर्ती के साथ वह पोशाक धारण कर ली। और दूसरे ही पल–
अरे रेरेरे! ओह! ये क्या? मैं इस विचित्र आंधी में फंस कर इसके अंदर खिंच रहा हूं। बचाओ।
हीहीही! अब बोल बच्चू?
कूऊश
ये चमत्कार कैसे हो गया?
लेकिन अगर मैं उस पोशाक का पीछे वाला छिद्र बन्द कर दूं तो मधुमक्खियां बांके को काट-काट कर सुजा देंगी। हीहीही। सही वक्त पर पहुंचा मैं।

सेनापति ने आगे बढ़कर पोशाक के पीछे वाले छिद्र को कपड़ा ठूंस कर बन्द कर दिया।
बन गया मेरा काम। हीहीही!
बहूहूहू! इस मक्खी राक्षस के कारण मुझे समय से पहले इस पोशाक का इस्तेमाल करना पड़ रहा है। फूटी मेरी किस्मत! अरे ये क्या? सेनापति ने इस यंत्र के पीछे का छिद्र बन्द कर दिया।
इधर वातावरण में फैली एक-एक मधुमक्खी अब समा चुकी थी बांकेलाल की पोशाक में। तभी—
बांकेलाल! तुमने तो कमाल कर दिया। ये पोशाक तुम्हें कहां मिली?
अरे! इसे मधुमक्खियों ने काटा नहीं।
व...वो मैं महामंत्रीजी!
सेनापति के जोर देने पर बांकेलाल को उतारनी ही पड़ी वह पोशाक और तब—
अरे! इस पोशाक से तो असली शहद टपक रहा है। नीम के घोल में मिलाकर महाराज को अभी देता हूं। उल्टी दस्त सब रुक जायेंगे।
और सचमुच इस बार दवा काम आ गई।
मैं ठीक हो गया और मैं सब कुछ सुन चुका हूं।
दे बांके पप्पी!
बहूहूहू! अगर मुझे पता होता कि मक्खी राक्षस यहां आने वाला है तो फिर मैं यहां क्यों आता।
फूटी किस्मत!

और फिर दरबार में—
आज पप्पी स्वादिष्ट नहीं थी।...
...क्योंकि आज इसमें एक अपराध की कड़वाहट भी घुल गई है।
सेनापति! बांकेलाल को फौरन हिरासत में ले लो।
हिरासत में?
हिरासत में?
महाराज! बेड़ियां लाने में तो समय लगेगा। मैं पुरोहितजी के अंगोछे से ही बांकेलाल को जकड़कर हिरासत में ले लेता हूं।
प...परन्तु महाराज! बांकेलाल ने आप के साथ-साथ सैकड़ों लोगों के प्राण बचाए हैं।
हां! मगर इसके साथ ही बांकेलाल ने एक हत्या भी की है...
??

ऋषि पत्नीभक्त की हत्या! गीदड़ के आगे धक्का देकर उसे हत्या करते ऋषि की पत्नी ने खुद देखा है।
राजा हो या रंक। कानून सब के लिये बराबर है। हां भई!
इसलिये बांकेलाल पर हत्या का मुकदमा चलाया जायेगा।
तभी तेरी-फूं पर गूंज उठी टंकार। सेनापति ने तेरी-फूं का टोपा उठा कर मुंह से लगाया और बोला—
तेरी-फूं की फूं। कौन बोल रहा है? ओह, द्वारपाल? क्या वे सारे ऋषि फिर बांकेलाल को खोजते दरबार की ओर आ रहे हैं।
??
क्या? इस बार वे और भी अधिक क्रोध में हैं? क्या? देखते ही शाप दे देंगे।...
??
...क्या? कह रहे थे कि अगर किसी ने उसका पक्ष लिया तो उसे और भी भयानक शाप देंगे।
??

महाराज! अब क्या करें? अगर मैंने बांकेलाल को हिरासत में लिया तो ऋषि मुझे भी शाप दे देंगे।
विशालगढ़ के राजा हम हैं। अपराधी को दण्ड देने का अधिकार केवल हमें है।
किंतु महाराज! उन्हें रोक कर मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ कौन डालेगा?
उन्हें तो मैं भी नहीं रोक सकता। बहूहू।
महाराज! एक ही तरकीब है। बांकेलाल को फिर से आपके पाजामे में छिपा दिया जाए... हीहीही!
और जैसे ही ऋषि चले जाएं, बांकेलाल को हिरासत में लेकर कारागार या काल कोठरी में डाल दिया जाए।
हीहीही!
सेनापति के बच्चे!
बेचारा बांकेलाल करता क्या न करता।
बांकेलाल! पाजामा आ गया है। और मैंने पांयचों में गांठें भी लगा दी हैं। चलो घुसो इसमें। हीहीही।
बहूहूहू!

बांकेलाल को पाजामे में बंद करके सेनापति ने नाड़े को कस कर गांठ लगा दी -
बांकेलाल! दम घुटने लगे तो सांस मत ले लेना। पाजामा हिलता दिखेगा तो ऋषि छोड़ेंगे नहीं। ही ही ही!
गुर्रर्र...
सेनापति ने सैनिकों की मदद से उस पाजामे को खूंटी पर टांग दिया जिसमें अब सांस रोके पड़ा था बांकेलाल।
एक बार पाजामे से छूट जाऊं। मोटे मुच्छड़! तुझे तो मैं देख ही लूंगा। गुर्र्र्र!
तभी-
जय जय हनुमान गुंसाईं बांके पर कृपा मत करो गुरुदेव की नांई।
बम-बम भोले! बांके के लिये नरक का द्वार खोले।
अलख निरंजन! बांके के मुंह पर मलो बन्दर छाप काला दंत मंजन।
महाराज! बांकेलाल कहां है? ऋषि योगाचार्य को योगशक्ति से पता चला है कि...
...बांके महल में उत्तर दिशा की ओर है जहां आप का राजदरबार सजा है।
??

महाराज! देखिये इस गोले को।
ये मेरे स्वामी की चिता की राख है, जिसे मैंने अपने आंसुओं से गूंथ दिया है...
??
??
महाराज! अब इस गोले को मैं हरजाई बांकेलाल के सिर पर फोड़ कर उसे शाप दूंगी। कहां है बांकेलाल?
मैं झूठ नहीं बोलता। बांकेलाल मेरे पाजामे में...
...अरे! ये क्या? राजदरबार में यह पाजामा क्यों टंगा है?
गांठ खोल कर देखता हूं।
मिल गया! गुर्र्र्र! बांकेलाल कहां छिपा है! निकल दुष्ट बाहर!
महाराज! बचाओ! बहुहुहु!

मेरे शाप से तू नहीं बचेगा दुष्ट हत्यारे!
और हमारे भी शाप से नहीं बचेगा।
महाराज बचाइये!
मैं क्या करूं बांकेलाल! ओह! यह क्या?
तड़ाक
महाराज! शाप वाला गोला आपसे टकरा गया। बांकेलाल के स्थान पर शाप आपको मिल गया।
अब आपकी मृत्यु धक्का लगने से होगी।
नहींऽऽऽ
और ये सब हुआ दुष्ट बांकेलाल के कारण। वो भाग रहा है। जल्दी से कमंडल का जल बांके पर छिड़क कर उसे शाप दो अन्यथा ये भाग जायेगा।
भाग बेटा बांके! मुच्छड़ को तो मिल गया अब तुझे भी न मिल जाए। बहुहुहु!

दरवाजे के पास पहुंचकर बांकेलाल ने नीचे छलांग लगा दी।
जय भोले शंकर!
हिन हिन हिन! ओह! बेचारा! आसमान से गिरा...
...खजूर में अटका। हीहीही। क्योंकि मैं घोड़ा हूं सकती इसलिये मुझे घुड़साल से निकाल कर यहां बांध कर रखा गया था। हीहीही। हिन हिन।
मर गया। अबे उछल मत, मैं गिर जाऊंगा।
हिन हिन (तू गिरेगा। तभी तो मैं कुचलूंगा। हीहीही।) हिन हिन हिन।
एक ओर को भागता चला गया–
भाग बेटा बांके! क्योंकि तुझे ऋषियों के अलावा सैनिकों के हाथ पड़ने से भी बचना है। वरना तुझे उस मनहूस ऋषि की मौत का दण्ड भुगतना ही पड़ेगा। बहुहुहु!
जबकि अन्दर भी सनसनी मची हुई थी–
महाराज! संभल कर! कहीं धक्का न लग जाए।

अरे, ये क्या? महाराज आप के हाथ तो चिपचिपे हो रहे हैं!
मेरे हाथ चिपचिपे?
राजवैद्य ने तुरन्त आगे बढ़कर विक्रमसिंह का निरीक्षण किया-
अरे! कमाल है! महाराज से तो शहद टपक रहा है!
शहद!
शहद कहां से आ गया?
महाराज के मसामों से निकल रहा है महारानी जी!
ये चिपचिपाहट तो मुझे काफी देर से महसूस हो रही थी, पर मैंने सोचा कि पसीना आ रहा है!
महारानीजी फिलहाल तो इनके छत्ते की चिंता करनी चाहिये।
मेरे विचार में तो इन्हें एक पिंजरे में बन्द कर देना चाहिये। कहीं भूलवश किसी का धक्का लग गया तो?
मगर पिंजरा कहां से आयेगा?
विशालगढ़ के चिड़ियाघर से वनमानुष का पिंजरा खाली करवाकर मंगवा लेते हैं।

फिर सर्वसम्मति से हुए फैसले के बाद विक्रमसिंह को पिंजरे में डाल दिया गया।
यहां महाराज सुरक्षित रहेंगे।
महाराज! अपना ध्यान रखियेगा।
मैं शहद इकट्ठा करवाने का इंतजाम करता हूं।
बहुहुहु! हुण की होगा दस्सो?
हुण की होगा दस्सो = अब क्या होगा बताओ।
ऋषियों से बचकर भागा तो जा पहुंचा
हुफ्फ! आज तो तू बुरा फंस गया था बांके बेटा। शुक्र है दोनों मुसीबतों से छुटकारा मिल गया।
लेकिन अब क्या होगा? महल वापस लौटा तो मैं बन्दी बना लिया जाऊंगा और अगर ऋषियों के हाथ पड़ गया तो शाप से नहीं बचूंगा।
लगता है तेरे बुरे दिन आ गए हैं बांकेलाल बेटे।
हे भोले शंकर! ये तूने मुझे कहां फंसा दिया? उठा
गर्रर्रर्र! अपने पड़ोसियों को उठाने ही तो मैं आया हूं! हीहीही!
क... कौन है? कौन गुर्राया?

बैठा रह बांकेलाल। मैं कोई तेरा दुश्मन नहीं हूं। हीहीही।
ब..बोलने वाला भालू ?
मुझे तेरे पास से शहद की भीनी-भीनी सुगन्ध आई है...तभी मैं यहां चला आया हूं। हीहीही। गर्रर्र। बता कहां है शहद?
शहद?
गर्र्र्र...नहीं बताता? कोई बात नहीं। मैं खुद ढूंढ लूंगा।
चपर
और दूसरे ही पल चमत्कार हो गया—
अरे! ये क्या?
म...मैं ठीक हो गया।

बांके हैरान खड़ा उस दृश्य को देख रहा था—
मिल गया। मिल गया। अब मैं इसे जाने नहीं दूंगा। हूऊऽऽऽ
हिम्मत करके आखिर पूछ ही बैठा बांके—
त..तुम कौन हो भाई? य...ये सब क्या चक्कर है? और तुम इस प्रकार हूऊ क्यों कर रहे हो?
हूऊऽऽऽ हाहाहा। ऐसा करके मैं अपने साथियों को बुला रहा हूं।
और मैं कौन हूं। ये भी तुम्हें शीघ्र ही पता चल जायेगा। वो देखो मेरे साथी आ गए।
और भालू? बहुहुहु!
पकड़ लो इसे। और ले चलो इसे पापे के पास। पापे दी हट्टी पर। हीहीही।
गर्र्र्र

भालुओं ने बांके को तुरन्त अपनी कैद में ले लिया और उसे अज्ञात स्थान की ओर ले चले–
ये पाये कौन है? ये मुझे वहां क्यों ले जा रहे हैं? बहूहूहू। मेरा मुंह चाटते ही भालू का रूप परिवर्तन कैसे हो गया?
आज पाये प्रसन्न होगा। हीहीही।
किंतु विचित्र घटनाएं केवल वन के उसी हिस्से में नहीं घट रही थीं...
...बल्कि एक अन्य स्थान पर भी–
हाहाहा। मैं प्रकट हो गया।
...अब मुझे पता लगाना होगा कि इस बार मैं पृथ्वी के कौन से नगर में प्रकट हुआ हूं। क्योंकि अमावस्या की रात कल ही है। और मुझे कल तक ही यहां के राजा को धक्का लगाना होगा। हीहीही।
पर यहां से तू तब तक नहीं जा सकता जब तक तुझे जाने की इजाजत न दे दे ...

...लम्बडींग। हीहीही। बोल 'हां' के 'ना' हीहीही। (सुसक सुसक)
हां के ना?
कौन है तू? तुझे पता है मैं कौन हूं? हीहीही।
अगर मैंने तुझे धक्का लगा दिया तो तू नहीं रहेगा। छोड़ मेरी कलाई।
ये हाथ नहीं राक्षस, फांसी का फन्दा है। छुड़ा सके तो छुड़ा ले। हीहीही। बोल हां के ना।
हां के ना!
बहूहूहू! इसकी पकड़ तो सचमुच बहुत मजबूत है। मैंने इसे धक्का मारा तो मेरी कलाई भी टूट जायेगी।
अब तुम बताओ कि तुम मेरी कलाई छोड़ने का क्या लोगे?
पहले तू ये बता कि तू मेरी लम्बी कविता सुनेगा या छोटी सी पहेली। फिर मैं तुझे विशालगढ़ में पहुंचने का रास्ता बताऊंगा।
पहेली!
तो फिर ध्यान से सुन और उत्तर दे।

ऐसी चीज बता जो होती है पर हम उसे इस आम की तरह पकड़ नहीं सकते। हीहीही। दे जवाब।
ऐसी चीज पता कोनि!
*पता कोनि = पता नहीं।
मैं बताता हूं! वो चीज है वायु! बोल हां के ना! हीहीही!
हां के ना! हीहीही!
अब ऐसी चीज बता जिसे हम पकड़ तो सकते हैं पर वो हाथ में नहीं होती। हीही ही।
पत्ता कोनि भाई!
मैं बताता हूं। वो चीज है पकड़। हीहीही। बोल हां के ना। हीहीही।
हां के ना। हीहीही।
अब ऐसी चीज बता जो हाथ में भी होती है जिसे हम पकड़ भी सकते हैं। हीहीही।

हां के ना भाई! हां के ना! हीहीही।
अब ऐसी चीज बता जो बन्द मुट्ठी में भी दिखती है और खोल दे तो भी दिखती है। हीहीही।
ऊंऽऽऽऽ पता ही कोनी!
मैं बताता हूं। वो चीज है उंगलियां। हीहीही बोल हां के ना!
हां के ना। हीहीही।
अब तो छोड़ कलाई।
ले। छोड़ दी। पर ये तूने बहुत अच्छा किया जो मुझे जवाब दे कर ज्यादा समझदार बनने की चेष्टा नहीं की। तू एक भी बात का सही जवाब दे देता तो मैं तुझे लम्बी कविता भी सुना देता। हीहीही।

उस तरफ है विशालगढ़ और विशालगढ़ का राजमहल। जहां तुझे मिलेगा विक्रमसिंह राजा। बोल हां के ना। हीहीही।
हां के ना। हीहीही।
राक्षस बढ़ चला विशालगढ़ की ओर—
जबकि इधर वन के दूसरे हिस्से में पापे दी हट्टी पर—
पापे! मैं तो इसकी तलाशी ले रहा था क्योंकि मुझे इसके पास से शहद की खुशबू आ रही थी, पर मैंने जैसे ही इसका गाल चाटा मैं ठीक हो गया।
हुजूर पापे! रास्ते में जब मैंने भी इसका मुंह चाटा तो मेरा मुंह तो कड़वा हो गया। गुर्रर्र!
लेकिन शाप के मुताबिक तो हम केवल ऐसे शहद से ही ठीक हो सकते हैं जो मधुमक्खी से पैदा न हुआ हो।

इसका मतलब वैसा शहद इसके गाल पर लगा था। बता! तेरे गाल पर शहद कहां से लगा?
बहुहुहु! कल अमावस की रात है और अगर कल तक हमें ऐसा शहद न मिला जिसे मधुमक्खियों ने पैदा न किया हो तो...
हमारी नौकरी चली जायेगी। बहुहुहु!
पापे! ये ऐसे नहीं बतायेगा। लगता है इसकी आत्मा खींचनी पड़ेगी!
...नहीं! ठहरो खबूस! हम यम हैं और केवल उसी की आत्मा उसके शरीर से जुदा करते हैं, जिसका समय पूरा हो चुका होता है!
यम?
पापे के कहने पर खबूस ने बांके की आत्मा को स्वतन्त्र कर दिया। जबकि पापे गम्भीर रूप से कह उठा।
बांकेलाल! सुनो कहानी।

"हम यम हैं यमलोक से पृथ्वी पर उन लोगों की आत्माएं उनके शरीर से जुदा करने आते हैं, जिनका समय पूरा हो चुका होता है यानी कि जिनकी मृत्यु निकट होती है"
जय परमात्मा! निकल आत्मा! हीहीही!
हिच्च!
"दो दिन पूर्व ही हम यमों की टोली मेरे नेतृत्व में आत्माएं इकट्ठा करने पृथ्वी पर पहुंची थी"
खड़ूस! उन लोगों की सूची बाहर निकाल लो। जिनके प्राण हमें हरने हैं।
ठीक है पापे!
"मैंने यमदूतों को आत्माएं इकट्ठा करके एक स्थान पर पहुंचने का आदेश दे कर उन्हें अलग-अलग स्थानों पर भेज दिया"
ध्यान रहे! अमावस की रात्रि हमें वापस यमराज के दरबार में हाजिरी देनी है उससे पहले ही लौट आना।
"जबकि मैं जा पहुंचा ऋषि पत्नी भक्त की आत्मा लेने"
हीहीही! तेरा समय पूरा हो गया है ऋषि।

"मैं अभी ऋषि पत्नीभक्त की आत्मा निकालकर फारिग ही हुआ था कि खड़ूस वहां आ पहुंचा और"
इस तरफ एक बहुत बड़ा छत्ता है। यमों ने पत्थर मार कर मधुमक्खियों को भगा दिया है। शहद खाना है तो जल्दी आओ। वरना खत्म हो जायेगा। मैं तुम्हें ही लेने आया हूं।
"तब खड़ूस के कहने पर मैंने ऋषि पत्नी-भक्त की आत्मा को वहीं वृक्ष पर टांग दिया और दौड़ पड़ा खड़ूस के साथ शहद खाने"
जल्दी चलो पापे! वरना शहद खाने को नहीं, चाटने को ही मिलेगा।
मुझे छोड़ कर कहां जा रहे हो? बहुहुहु!
"खड़ूस के साथ मैं समय पर वहां पहुंच गया। और हम सब शहद खाने लगे"
अति स्वादिष्ट!
वाह!

मगर अभी शहद खा कर हमारा दिल भी नहीं भरा था कि तभी एक क्रोधित ऋषि टपकाचार्य वहां टपक पड़े–
ओह! तो भालुओं की तरह शहद खाने के लिये मधुमक्खियां तुमने उड़ाई थीं। जिन्होंने क्रोध में भर कर मुझे काट-काट कर सुजा दिया।
मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम भालू बन जाओ।
नहीं!
हम तुरन्त भालू बन गए–

यह देखकर हम ऋषि टपकाचार्य के पांव पड़ गए–
महर्षि! क्षमा करें। हमें नहीं पता था कि मधुमक्खियां काटती भी हैं।
ओह! इसका मतलब यह सब तुम्हारी अज्ञानता के कारण हुआ। तब तो तुम्हें क्षमा करना ही पड़ेगा।
... ठीक है। जिस दिन तुम ऐसा शहद चाट लोगे जो तुम्हें मधुमक्खियों से प्राप्त न हुआ हो उसी समय तुम अपने सही रूप में लौट आओगे।
ढ़ढ़ियल चकमा दे गया।
सब कथा सुनाने के बाद पापे गम्भीर स्वर में बोला–
बांकेलाल! कल अमावस है। कल तक अगर हम अपने वास्तविक रूप में न लौटे तो यमराज हमें भयानक दण्ड देंगे। लेकिन अगर तुम यह बता दोगे कि तुम्हारे गाल पर वह शहद कहां से लगा जिसे चखते ही खड़ूस ठीक हो गया तो हम भी उस शहद को चखकर ठीक हो जायेंगे और आत्माएं लेकर वापस लौट जायेंगे।
और इतना सब सुनने तक भला बांकेलाल की शैतान खोपड़ी कोई योजना न बुन पाती। ये तो हो नहीं सकता ऽऽऽ। हो नहीं सकता ऽऽऽ
वो मारा पापड़वाले को।
अगर मैं इन भालुओं को यह कहकर मोटे के पास भेज दूं कि शहद का मटका मोटे के पेट में छिपा है तो ये जरूर उसे फाड़ कर खा जायेंगे।
बांकेलाल! जल्दी बताओ। वरना मुझे गुस्सा आ गया तो मैं तुम्हारी भी आत्मा खींचकर वृक्ष पर टांग दूंगा और फिर तब लेकर जाऊंगा जब तुम्हारी मृत्यु लिखी होगी। गुर्रर्रर्र।
ठ... ठहरो।

म...म... मैं सच कह रहा हूं! मुझे नहीं पता कि मेरे गाल पर शहद कहां से लगा। मेरा गाल तो कुच्छड़ की पप्पी से कड़वा होना चाहिये था। बहुहुहू!
इस बार चौंक पड़ा पापे–
कौन कुच्छड़!
मनहूस!
कौन मनहूस?
मोटा! मेरा मतलब विशालगढ़ का राजा विक्रमसिंह!
राजा विक्रमसिंह ने तुम्हारी पप्पी ली थी। ओह! इसका मतलब वो शहद उसके मुंह पर लगा था।

आदेश देता हूं!
नहीं! वहरे चलता हूं!
बहुहुहू! अब तो इन्हें लेकर जाना ही होगा।
के आदेश पर उसकी पीठ पर अभी कुछ पहुंचा था कि–
ब... बापरे! ये तो यहां भी आ पहुंचे!
वो रहा बांकेलाल! योगाचार्य का दिया अनुमान बिल्कुल ठीक निकला!
तुम इनसे क्यों रहे हो? ये तुम्हारा क्या बिगाड़ लेंगे?
अनजाने में मेरे हाथों इनके एक साथी की हत्या हो गई है। उसका दण्ड देने के लिये ये सारे मुझे शाप देना चाहते हैं। मुझे जाने दो। बहुहुहू!
कमंडल का जल अंजुली में भर लो। और बांके पर छिड़क कर उसे शाप दे दो।

लेकिन ठीक उसी वक्त बांकेलाल झाड़ियों के पीछे से निकल आया–
अरे बाप रे! बांकेलाल तो भालुओं पर बैठा है।
गर्र्र्
और इन भालुओं पर शाप की धमकी का भी असर नहीं होगा।
भागो!
वाह प्यारे! बांकेलाल तुम पर प्रसन्न हुआ। चलो राजमहल।
हां! मगर यमदूत किसी पर प्रसन्न नहीं होते!
उसी समय विशालगढ़ के राजमहल में–
मैं सीधे वहीं प्रकट हो गया जहां विशालगढ़ का राजा मौजूद है। मुझे इसे ही धक्का मारना है।
भाग लुहारसिंह!
अरे राक्षस!

पिंजरे की चाबी तो हमारे पास है! हीहीही! बहुहुहु!
"मैं" ने पिंजरा तोड़ डाला–
हा हा हा! राजा! पिंजरा टूट गया!
दुष्ट! अब वनमानुष किसमें रहेगा?
तभी सेनापति भी वहां पहुंचे–
कौन है? किसकी मौत आई है जो हमारे राजा को धक्का मारने आया है।
नहीं!
ये... ये तो राक्षस है। पर लुहारसिंह तो कह रहा था कि कोई चूहा महाराज को धमका रहा है। तभी तो मैं चूहेदानी लेकर आया था।
भाग जाओ! वरना तुम्हें भी धक्का दे दूंगा। हीहीही
सेनापति तलवार लाने की कहकर बाहर निकल गया–

लेकिन तभी सारा वातावरण गूंज उठा भालुओं की गुर्राहटों से और–
ये क्या? ये तो बांकेलाल है। पर इसकी दोस्ती भालुओं से कैसे हो गई? ये मुझे भालुओं से तो नहीं कटवायेगा। बहूहूहू।
गर्रर्र
जबकि अन्दर उसी समय–
हीहीही! राजा! अब मैं तुझे धक्का मारूंगा। अब तू गया राजा। हीहीही।
राक्षस?
कुटट! अगर तूने उसे मार डाला तो हमें उस शहद का पता नहीं चलेगा जिसे खाकर हम ठीक हो सकते हैं।
धाड़

मेरी कुण्डली में लिखा था कि अगर मेरे द्वारा राजा को धक्का दिये जाने से पहले ही मुझे किसी भालू का धक्का लग गया तो मेरी मृत्यु हो जायेगी। ओह!
मैं इसकी आत्मा खींच लेता हूं। क्योंकि इसका भी नाम मेरी सूची में है।

इधर बांकेलाल को देखते ही विक्रमसिंह की प्रसन्नता का पारावार न रहा–
बांकेलाल! तुम! ये भालू तुम्हें कहां मिल गए? बहुहुहु!
मगर इससे पहले कि बांके विक्रम को उसकी बात का जवाब दे पाता–
अरे! शहद! स्रड़प!
दूसरे ही पल–
मैं भी ठीक हो गया पापे!
मगर वो पल अब किसी को दिखाई न पड़ रहा था।
बस फिर क्या था? सभी भालुओं ने विक्रम के शरीर से टपकती शहद की एक-एक बूंद तक चाट ली और–
हम ठीक हो गए!
तभी वहां महामंत्री, स्वर्णलता व अन्य मंत्रियों के साथ सेनापति ने भी कई सैनिकों के साथ प्रवेश किया–
अरे! बांकेलाल हवा में कैसे टंगा गया?
बांकेलाल! मेरी पीठ से नीचे उतरो।
जब बुरी तरह हैरान खड़े विक्रमसिंह ने पूछा–
बांकेलाल! वो सब भालू शहद चाट कर कहां गायब हो गए? ये सब क्या चक्कर है?
फूटी किस्मत! शहद तो मोटे के शरीर पर ही बह रहा था। जबकि मैं सोच रहा था कि भालू उसे फाड़ कर उसके पेट से शहद निकालेंगे।

महाराज! शंकर भगवान ने ही मुझे स्वप्न में दर्शन देकर राक्षस के धक्के के विषय में और यक्षों की टोली के विषय में बताया था जो ऋषि टपकाचार्य के श्राप से भालू बन गए थे।...
...और ऐसे शहद से ठीक हो सकते थे जिसे मधुमक्खियों ने न बनाया हो।
पिछली बार जब आपने मेरी पप्पी ली मैं समझ गया कि आपके शरीर से शहद टपक रहा है। बस, मैं यहीं सोचकर यहां से भागा था...
...कि आपके शरीर से बहता शहद चाट कर ही यक्ष अपने वास्तविक रूप में लौट सकते हैं और आप भी राक्षस के धक्के से बच सकते हैं। बस महाराज!
यही है मेरी दुखभरी कहानी। बहुहुहु!
और तभी सभी ऋषि भी वहां आ पहुंचे–
बांकेलाल! अब तू नहीं बचेगा। हमारे शाप से।

अब आप अपनी पसंद की केवल एक कॉमिक भी घर बैठे मंगा सकते हैं।

नागराज की किसी भी एक कॉमिक का आर्डर कॉमिक की कीमत व डाक खर्चे के साथ हमें भेजिए और वह कॉमिक्स अपने घर बैठे पाइए।

नागराज के 40/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- कोहराम
- जलजला
- विध्वंस
- परकाले
- ड्रैकुला का अंत
- कोलाहल
- खलनायक
- सम्राट
- विनाश
- तानाशाह
- सूरमा
- कलियुग
- सीडांगी
- सर्व शक्तिमान
- चक्र
- मैडूयूसा
- छोटा नागराज
- नागाधीश
- वर्तमान

नागराज के 30/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- शेषनाग
- भानूमति का पिटारा

नागराज के 20/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव
- नागराज और नगीना का जाल
- नागराज और बुगाकू
- फिर आया नागदंत
- नागराज और नगीना
- नागराज और मिस किलर
- विजेता नागराज
- विसर्पी की शादी
- शाकूरा का चक्रव्यूह
- नागराज का अंत
- जहर
- नागपाशा
- खजाना
- क्राइमकिंग
- विषकन्या
- स्नेक पार्क
- इच्छाधारी
- केंचुली
- जहरीले
- बांबी
- सपेरा
- फंन
- नागिन
- विष-अमृत
- सम्मोहन
- राज का राज
- मृत्युदंड
- नागद्वीप
- त्रिफना
- महायुद्ध
- अग्रज
- नागराज का कहर
- तांडव
- आतंक
- दुश्मन नागराज
- शक्तिहीन नागराज
- नहीं बचेगा नागराज
- कालचक्र
- कुंडली
- ऐलान-ए-जंग
- काली मौत
- नागराज अमेरिका में
- आतंकवादी नागराज
- विषहीन नागराज
- इच्छाधारी चोर
- लावा
- विनाशलीला
- पागल नागराज
- मसीहा
- सो जा नागराज

नागराज के 25/- मूल्य वाले कॉमिक विशेषांक

- राजनगर की तबाही
- प्रलय
- कयामत
- संग्राम
- संहार
- नागराज और ड्रैकुला
- रक्षक नागराज

नागराज के 15/- मूल्य वाले कॉमिक

- नागराज
- नागराज की कब्र
- नागराज का बदला
- नागराज की हांगकांग यात्रा
- नागराज और शांगो
- खूनी खोज
- खूनी यात्रा
- नागराज का इंसाफ
- खूनी जंग
- प्रलयंकारी नागराज
- खूनी कबीला
- कोबरा घाटी
- बच्चों के दुश्मन
- प्रलयंकारी मणि
- शंकर शहंशाह
- नागराज का दुश्मन
- इच्छाधारी नागराज
- नागराज और कालदूत
- नागराज और जादूगर शाकूरा
- नागराज और बौना शैतान
- नागराज और ताजमहल की चोरी
- नागराज और लाल मौत
- नागराज और काबुकी का खजाना
- नागराज और थोडांगा
- नागराज और तूफान-जू
- नागराज और जादू का शहंशाह
- नागराज और अजगर का तूफान
- बकोरा का जादू
- पिरामिडों की रानी
- नागराज और मिस्टर 420
- थोडांगा की मौत
- नागराज और बेमबेम बिगेलो

Now you can order all your favorite comics from our online book store www.rajcomics.com

कोई भी 100/- मूल्य से कम की कॉमिक्स हमसे डाक द्वारा मंगाने पर कॉमिक्स के मूल्य के साथ 20/- डाक खर्च भेजें।

कोई भी 100/- मूल्य या अधिक की कॉमिक मंगाने पर डाक खर्च मुफ्त!

आप अपनी पसंद की कॉमिक्स अग्रिम भुगतान भेजकर डाक द्वारा मंगा सकते हैं। अग्रिम भुगतान निम्नलिखित दो तरीकों से भेज सकते हैं।

1. निकटवर्ती पोस्ट ऑफिस से अपनी आदेशित कॉमिको के मूल्य का मनीआर्डर राजा पॉकेट बुक्स **330/1**, बुराडी, दिल्ली-84 के नाम बनवाकर, मनीआर्डर फार्म के संदेश वाले स्थान पर आदेशित पुस्तको के नाम व अपना पता साफ-साफ लिखकर भेजें।
2. किसी भी बैंक से राजा पॉकेट बुक्स के नाम **Payable at Delhi** का ड्राफ्ट बनवाकर, पत्र के साथ जिसमे आपकी आदेशित पुस्तकों के नाम व आपका पता साफ-साफ लिखा होना आवश्यक है। भेजें।

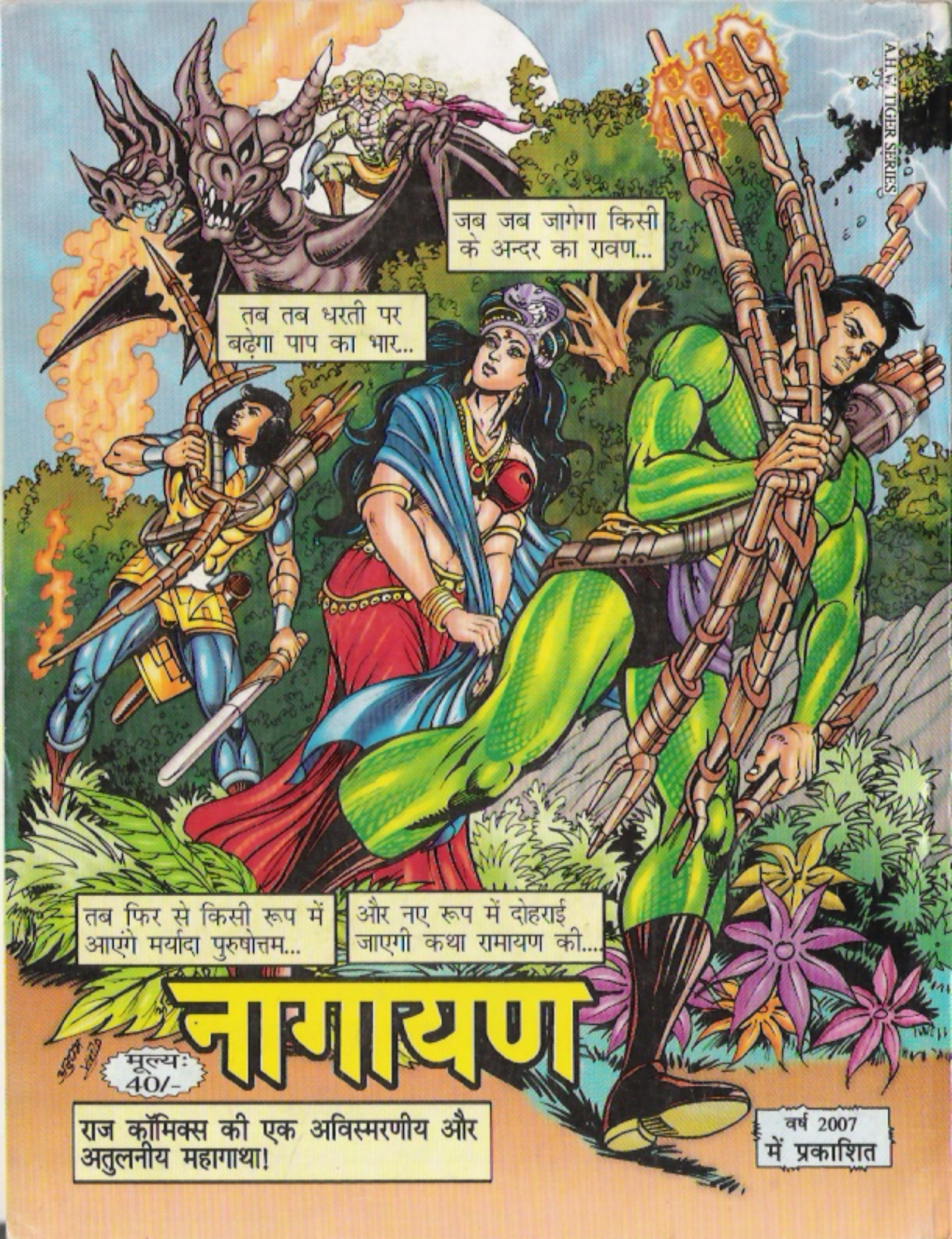

A.H.W. TIGER SERIES
जब जब जागेगा किसी के अन्दर का रावण...
तब तब धरती पर बढ़ेगा पाप का भार...
तब फिर से किसी रूप में आएंगे मर्यादा पुरुषोत्तम...
और नए रूप में दोहराई जाएगी कथा रामायण की....
नागायण
मूल्यः 40/-
राज कॉमिक्स की एक अविस्मरणीय और अतुलनीय महागाथा!
वर्ष 2007 में प्रकाशित